भुट्टा

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930
© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008
PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसैट (प्रा.) लि., बी-3, सैक्टर-65, नोएडा 201301 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-897-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पी. राजाकुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*

भुट्टा

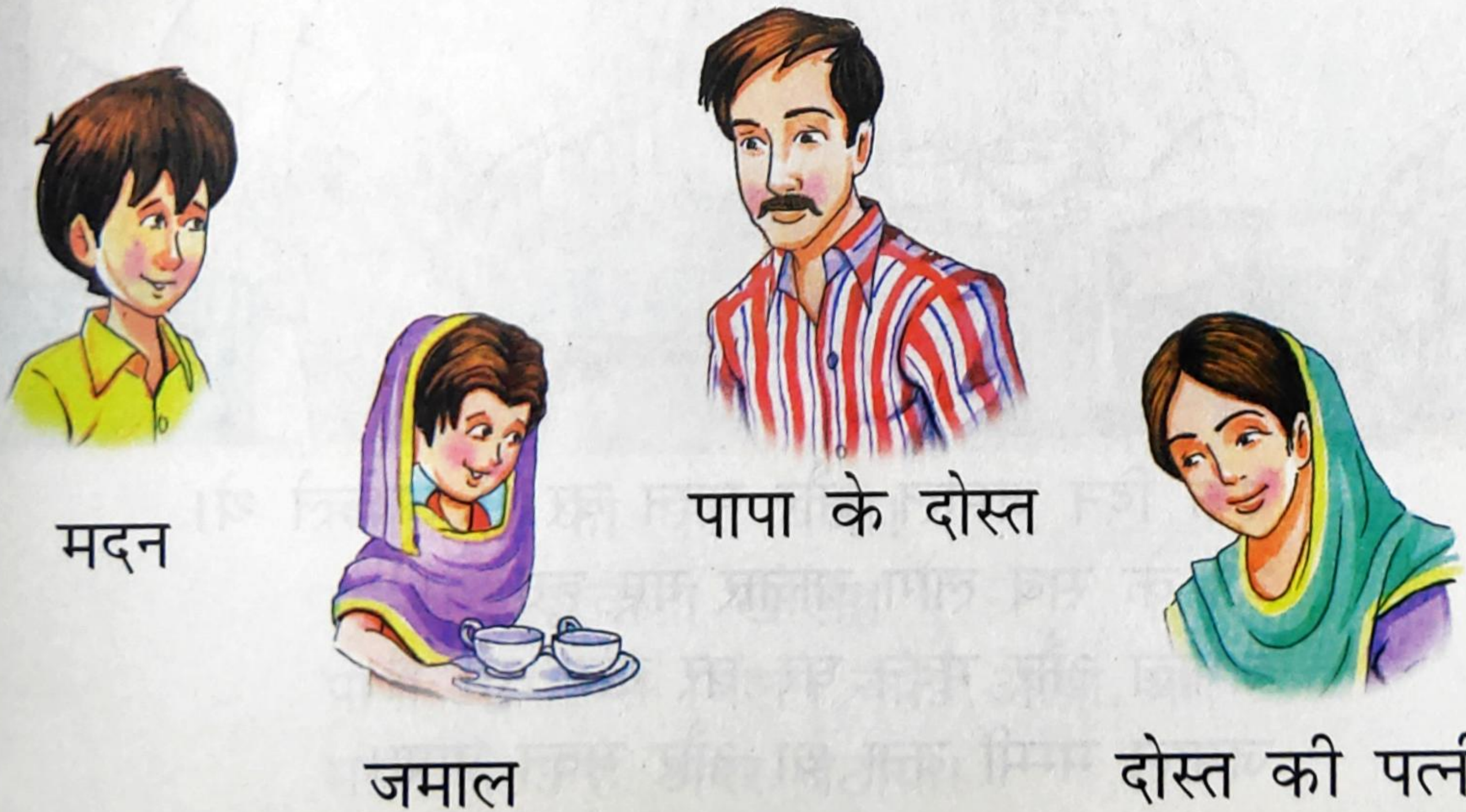

2

एक दिन जमाल और मदन घर में अकेले थे।
घर के सब लोग बाज़ार गए हुए थे।
जमाल और मदन घर-घर खेल रहे थे।
जमाल मम्मी बना था और मदन पापा।

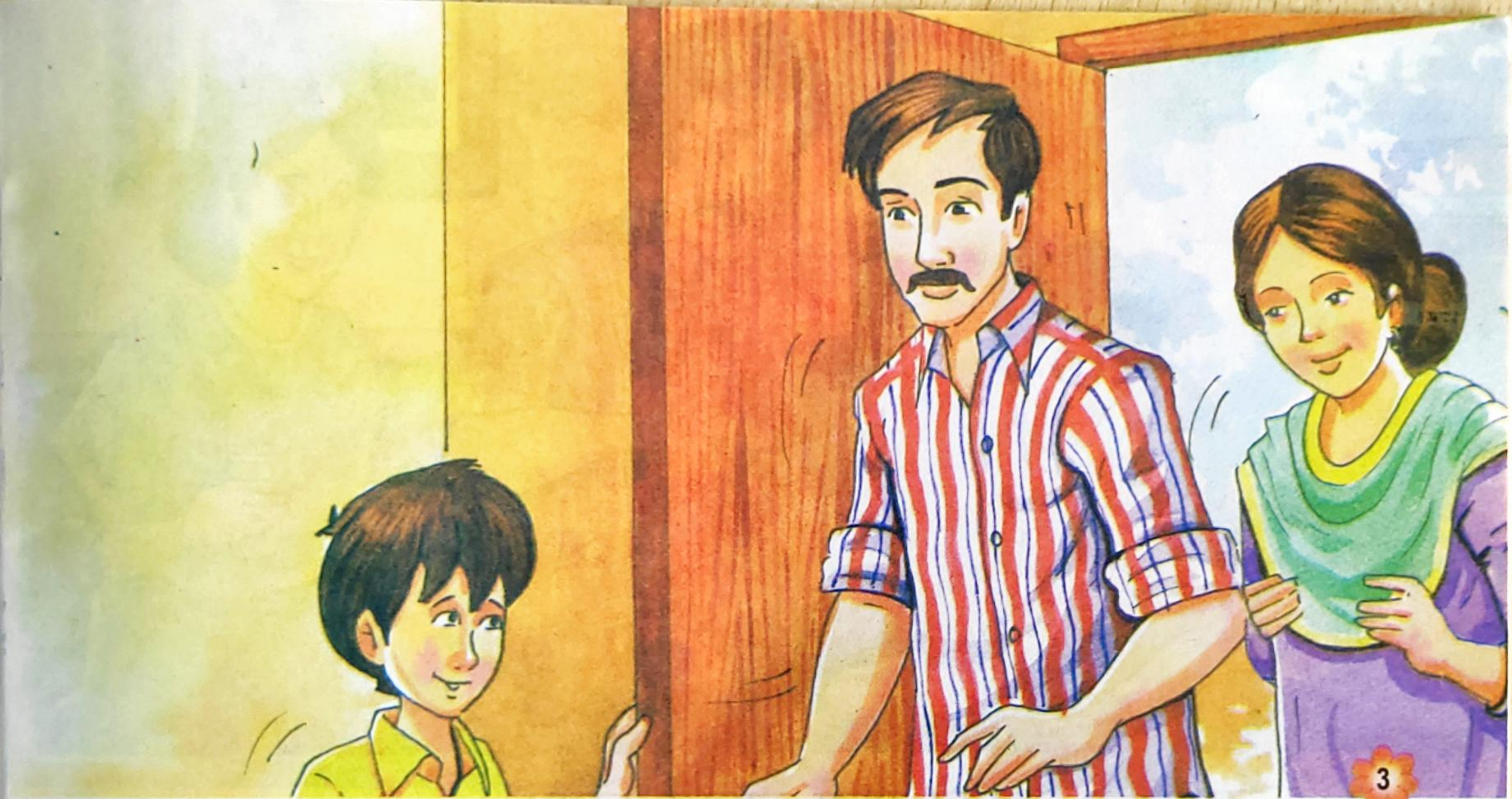

तभी घर की घंटी बजी।
मदन ने दरवाज़ा खोला।
पापा मम्मी से मिलने कोई आया था।
मदन ने उन्हें अंदर बैठाया।

जमाल ने उनको पानी लाकर दिया।
वे जमाल के पापा के दोस्त थे।
उनके साथ उनकी पत्नी भी आई थीं।
उन्होंने जमाल से मम्मी-पापा के बारे में पूछा।

जमाल ने बताया कि सब बाज़ार गए हुए हैं।
मदन बोला कि पापा सब्ज़ी लेकर जल्दी ही लौट आएँगे।
पापा के दोस्त और उनकी पत्नी इंतज़ार करने लगे।
वे आराम से पैर फैलाकर बैठ गए।

जमाल और मदन रसोई में आ गए।
जमाल चाय बनाने लगा।
मदन खाने के लिए कुछ ढूँढ़ने लगा।
मदन को डिब्बों में कुछ नहीं मिला ।

मदन की नज़र टोकरी में रखे भुट्टों पर पड़ी।
उसने चारों भुट्टे उठा लिए।
मदन ने सोचा कि भुट्टे भूने जाएँ।
जमाल चाय बनाने में ही लगा हुआ था।

मदन भुट्टों को छीलने लगा।
उसने भुट्टों के छिलके और बाल निकाले।
जमाल ने चाय को प्यालों में छाना।
उसने मदन के हाथ में भुट्टे देखे।

जमाल ने पूछा कि भुट्टों का क्या करोगे।
मदन ने कहा कि वह भुट्टे भूनने जा रहा है।
जमाल ने उससे भुट्टे छीन लिए।
वह बोला कि भुट्टे उबालकर खाएँगे।

जमाल और मदन में भुट्टों को लेकर लड़ाई हो गई।
मदन भुट्टे भूनना चाहता था।
जमाल भुट्टे उबालना चाहता था।
बनी हुई चाय एक तरफ़ रखी थी।

मदन ने दो भुट्टे जमाल को दे दिए।
उसने जमाल से कहा कि जो करना है कर लो।
जमाल ने भुट्टों के दो-दो टुकड़े कर दिए।
वह भुट्टों को उबालने लगा।

मदन चाय देने बाहर चला गया।
जमाल ने एक पतीले में पानी भरा।
उसने भुट्टों के टुकड़े पतीले में डाले।
पतीले को गैस पर चढ़ा दिया।

मदन रसोई में वापस आया।
वह दूसरी गैस पर भुट्टा भूनने लगा।
जमाल उबलते हुए भुट्टों को हिलाता रहा।
उसने पतीले में थोड़ा नमक भी डाला।

दोनों अपने-अपने भुट्टे लेकर आए।

पापा के दोस्त ने भुना हुआ भुट्टा खाया।

उनकी पत्नी ने उबला हुआ भुट्टा खाया।

उन्होंने जमाल और मदन के भुट्टों की खूब तारीफ़ की।

जमाल और मदन की और कहानियाँ

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

2096

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-897-3